माध्यमिक सम्बोधन
(Teknonymy)

नातेदारी-व्यवस्था की एक और रीति माध्यमिक सम्बोधन है। इस रीति को माध्यमिक सम्बोधन इसलिए कहा जाता है कि इस रीति के अनुसार एक सम्बन्धी को सम्बोधन करने के लिये किसी एक दूसरे व्यक्ति को माध्यम बनाया जाता है क्योंकि उस सम्बन्धी को उसके नाम से पुकारना वर्जित होता है। उदाहरणार्थ, भारतवर्ष के प्राय: सभी ग्रामीण समुदायो मे पति का नाम लेना पत्नी के लिये वर्जित होता है। इस कारण पत्नी पति को सम्बोधन करने के लिये अपने किसी लडके या लडकी को माध्यम बना लेती है और उसीके सम्बन्ध से पति को पुकारती है। जैसे, यदि लडके का नाम राजू है तो वह स्त्री अपने पति को 'राजू के पिता' कहकर सम्बोधित करती है।

'माध्यमिक सम्बोधन का अग्रेजी शब्द 'टेक्नॉनिमी' (teknonymy) ग्रीक भाषा से बना है और इसे मानवशास्त्रीय साहित्य मे सर्वप्रथम प्रयोग करने का श्रेय श्री टायलर को है। साख्यकीय पद्धति (Statistical Method) के आधार पर श्री टायलर का निष्कर्ष यह है कि माध्यमिक सम्बोधन की रीति मातृसत्तात्मक परिवार से सम्बन्धित है। इस प्रकार के परिवारो मे स्त्रियो की प्रधानता होती थी और पति को एक बाहर का व्यक्ति समझा जाता था जिसके कारण परिवार मे उसकी कोई विशेष स्थिति नही होती थी। इसीलिये उसे प्राथमिक सम्बन्धियो (primary kins) मे सम्मिलित न करके केवल द्वितीयक सम्बन्धी (secondary kins) के रूप मे स्वीकार किया जाता था और इस उद्देश्य से उस पति को उन बच्चो के, जिनको कि पैदा करने मे उसने सहायता की है, माध्यम से सम्बोधन किया या पुकारा जाता था। इसी रीति का जब विस्तार हुआ तो माता को भी माध्यमिक सम्बोधन से पुकारा जाने लगा।

श्री टायलर (Tylor) का कथन था कि उनके अध्ययन मे प्राय ३० जनजातियाँ ऐसी थी जिनमे कि माध्यमिक सम्बोधन की रीति प्रचलित थी, जिसमे कि दक्षिणी अफ्रीका की बेचुयाना, पश्चिमी कनाडा की क्रो तथा भारत (आसाम) की खासी जनजातियो का नाम विशेष उल्लेखनीय है। परन्तु आधुनिक अनुसन्धानो से पता चलता है कि माध्यमिक सम्बोधन की रीति का विस्तार इससे कही अधिक है। श्री फ्रेजर (Frazer) ने इस रीति का प्रचलन आस्ट्रेलिया, न्यू गिनी, मलाया, चीन, उत्तरी माइबेरिया, अफ्रीका की विभिन्न बाँटू (Bantu) जनजातियो, उत्तरी ब्रिटिश कोलम्बिया आदि मे पाया है। श्री लोई (Lowie) का कथन है कि श्री फ्रेजर द्वारा प्रस्तुत यह सूची भी पूरी नही है। उपरोक्त जनजातियो या स्थानो के अलावा भी अनेक अन्य स्थानो मे माध्यमिक सम्बोधन की रीति का प्रचलन है। उदाहरणार्थ, अण्डमान, लका, फिजी, मैलेनेशिया तथा अमेरिका के विभिन्न भागो मे भी इस रीति का प्रचलन है। होपी समाज मे एक स्त्री अपनी सास को 'अमुक की दादी' और ससुर को 'अमुक का दादा' कहकर पुकारती है। इसी ढग से पुरुष भी अपने सास-ससुर को सम्बोधित करते हैं। पति और पत्नी भी एक-दूसरे को बच्चो के माध्यम से सम्बोधित करते हैं।

माध्यमिक सम्बोधन की रीति की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे श्री टायलर के सिद्धान्त को भी श्री लोई ने स्वीकार नही किया है। आपका कथन है कि माध्यमिक सम्बोधन की रीति पुरुषो के लिये ही नही स्त्रियो के लिये भी क्यो प्रयोग मे लायी जाती है, इसकी व्याख्या श्री टायलर के मातृसत्तात्मक परिवार के सिद्धान्त के आधार पर सम्भव नही। आस्ट्रेलिया, मैलेनेशिया आदि की जनजातियाँ पितृसत्तात्मक और पितृस्थानीय होते हुए भी उनमे माध्यमिक सम्बोधन की रीति का प्रचलन पाया जाता है। वास्तव मे इस रीति का प्रचलन विभिन्न समाजो मे भिन्न-भिन्न कारणो से हुआ है। कुछ समाजो मे इसके प्रचलन का कारण स्त्रियो की गिरी हुई स्थिति है (जैसे गोल्ड जनजाति मे), कुछ समाजो मे पुरुषो की स्थिति नीची होने के कारण और कुछ समाजो मे प्रत्येक प्रकार के सम्बन्धी के लिये पृथक्-पृथक् शब्दो या सज्ञाओ की कमी के कारण (जैसे होपी जनजाति मे) इस रीति का प्रचलन हुआ है।[26]